बहुत ही सहज है राजयोग...

भगवान, ईश्वर, अल्लाह, खुदा, वाहेगुरू, गॉड आदि शब्दों से आप परिचित तो हैं ही, लेकिन इन नामों के आधार से हम परमात्मा को सही रूप से पहचानने में आज भी असमर्थ हैं। परमात्मा के स्वरूप के बारे में दुनिया में इतने अधिक मतभेद हैं कि सही सत्य विलुप्त सा हो गया है। इसलिए शायद आज ईश्वर के नाम पर मनुष्य अनेक धर्मों में बँट गये हैं।

आज जब भी कोई ध्यान लगाने बैठता है तो परमात्मा का सत्य ज्ञान न होने के कारण उनकी शिकायत रहती है कि मन तो परमात्मा में लगता ही नहीं। अरे भाई लगेगा कैसे! आपको जब पता ही नहीं है कि कहाँ लगाना है मन को, तो कैसे लगेगा!

गतांक से आगे...

परमात्मा को सही रूप से पहचानने के लिए हमारे पास पाँच कसौटी है, जिससे ये परखा जा सकता है कि भगवान ये हो सकता है। इसका आधार हम शास्त्रगत ही लेंगे और इस पर आप भी तर्क लगाने के लिए तटस्थ हैं। आत्मा के अध्याय में ये बात तो स्पष्ट हो ही गई है कि इन आँखों से दिखाई देने वाले जो भी देहधारी हैं, वे सभी आत्मायें ही हैं। उनमें कोई भी परमात्मा नहीं हो सकता। ऐसा क्यों है वो हम देख सकते हैं।

पहली कसौटीः परमात्मा वो हो सकता है जो सर्वधर्म, सर्वमान्य हो - सबसे पहली कसौटी परमात्मा के बारे में यही है कि वह सर्वमान्य हो अर्थात् सभी उसको मान्यता देते हों। सभी धर्म उस एक को ही मानते हों। लेकिन आज ऐसा नहीं है। क्या राम को सभी मानते हैं? नहीं, केवल हिन्दू धर्म के लोग ही मानते हैं, मुसलमान और ईसाई धर्म के लोग इसे मान्यता नहीं देते। ठीक उसी प्रकार हिन्दू धर्म के लोग भी उनके धर्मों के पीर, पैगम्बरों को मान्यता नहीं देते। सभी धर्म यदि एक को मान्यता दे तो उसे ईश्वर या परमसत्य कह सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है।

दूसरी कसौटी : जो सर्वोपरि हो - यहाँ सर्वोपरि का अर्थ है जो सबसे परे हो। मनुष्यात्मा आज जन्म-मरण के चक्र में आती है और कर्म करती है। लेकिन परमात्मा जन्म-मरण के चक्र से न्यारा है अर्थात् परे है। वो पाप-पुण्य, देह और देह के सम्बन्धों में नहीं आता अर्थात् सुख-दुःख के चक्र में नहीं आता। यदि वो आता तो वह भी कर्म

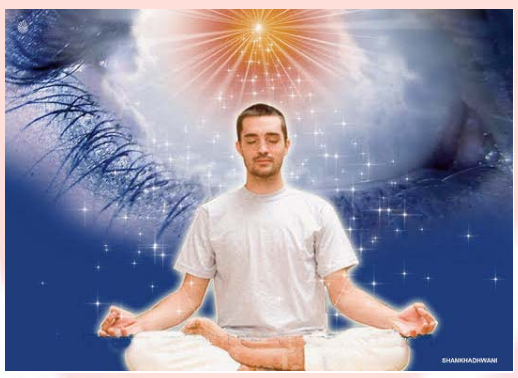

करता और हमें कर्मों से बाहर फिर कौन निकालता। यदि राम, कृष्ण, पैगम्बर मोहम्मद साहब, ईसा मसीह आदि को हम देखें तो इन सबने जन्म लिया और मृत्यु भी हुई तथा इन्होंने कर्म भी किया तो आप बतायें कि वो परमात्मा कैसे हो सकते हैं क्योंकि परमात्मा तो जन्म-मरण से न्यारा है।

तीसरी कसौटी : जो सर्वोच्च है - सर्वोच्च से यहाँ मतलब यह है कि उससे ऊँची शक्ति या उसके ऊपर कोई ना हो। जिसका कोई माता-पिता ना हो, कोई गुरू ना हो। जो गुरुओं का भी गुरू है उसे परमात्मा कहा जा सकता है। यदि हम पुनः दिव्य आत्मा या महान आत्माओं को देखें तो सबके गुरू, शिक्षक और माता-पिता थे तो वो सर्वोच्च कैसे हो सकते हैं।

चौथी कसौटी : जो सर्वज्ञ है - सर्वज्ञ का अर्थ जो सब कुछ जानता हो। जिसके पास संसार के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो, वो परमात्मा हो सकता है। यदि आप धारावाहिकों में या फिर शास्त्रों में या कथाओं में देखें तो दिखाया जाता है कि जब किसी देवी-देवता को समस्या आती है तो अपने से ऊपर किसी को ढूंढ़ता है। अमुक बात यदि ब्रह्मा से पूछें या विष्णु से पूछें तो सही जानकारी मिल सकती है क्योंकि वो हमसे ज़्यादा जानतें हैं, ऐसा आपने देखा होगा। अब यदि ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सबके पास समस्या आ जाए तो वे समाधान के लिए किसके पास जायेंगे। अब यहां सभी एक-दूसरे को अपने से सर्वज्ञ मानते हैं। परमात्मा अनादि और अविनाशी रूप से ही सर्वज्ञ है, उसे किसी से कुछ पूछने या जानने की आवश्यकता नहीं होगी। भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञाता परमात्मा ही होगा। इसलिए उसे त्रिकालदर्शी भी कहते हैं। - क्रमशः

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-18

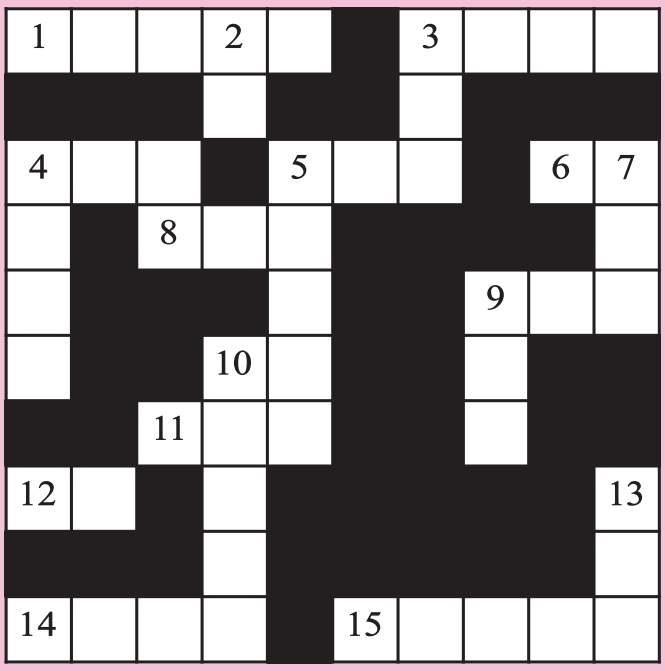

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

परमात्मा द्वारा प्रदत्त गुणों से अपना श्रृंगार करो

ऊपर से नीचे

2. शांति और खुशी बांटना हमें लोगों का प्रिय बनाता है महा.... है (2)
3. यह विश्व एक परिवार है, हमें सबके साथ.... से व्यवहार करना चाहिए (3)
4. परिस्थितियों का सामना करने के लिए .... का गुण आवश्यक है (4)
5. .... स्वभाव हमें लोगों के आदर का पात्र बनाता है (5)
7. शांत और .... स्वभाव (3)
9. आपसी सम्बन्धों में.... बनो (3)
10. जीवन में किसी भी योजना के लिए .... का होना बहुत ज़रूरी है (5)
13. शरीर आत्मा का पवित्र मंदिर है अतः आत्मा और शरीर दोनों में .... रखो (3)

बायें से दायें

1. .... और परिश्रम हमें सम्पत्तिवान बना देंगे (5)
3. आपको कोई अच्छा दे या बुरा आप सबको स्नेह दो....दो (4)
4. जीवन में संयम और .... हमें चरित्रवान बनाते हैं (3)
5. कार्यव्यवहार में .... है तो किसी भी प्रकार का भय उत्पन्न नहीं हो सकता (3)
6. .... जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं (2)
8. उमंग और .... हमें कार्य में सफलता दिलायेंगे (3)
9. .... मन परमात्मा को प्रिय लगता है (3)
11. .... स्वभाव कार्य को सरल बनाता है (3)
12. आत्मा की उन्नति के लिए .... की शक्ति आवश्यक है (2)
14. सन्तुष्टता सर्व गुणों की खान है और .... उसकी पहचान है (4)
15. जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए .... बहुत आवश्यक है (5)

- ब्र.कु.पायल,बोरीवली लोखंडवाला

शांतिवन। दादी के शताब्दी महोत्सव के दौरान नेपाल के पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम वरण यादव को ओमशान्ति मीडिया द्वारा हो रही सेवाओं से अवगत कराते हुए ब्र.कु. दिलीप।

नेपाल-वीरेन्द्रनगर। नेपाल के उप-राष्ट्रपति माननीय नन्द बहादुर पुन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विष्णु।

बिहार शरीफ-नालंदा। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' का उद्घाटन करते हुए जिला पदाधिकारी विनोद कुमार, कृषि वैज्ञानिक ज्योति सिन्हा, ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. संगीता, सांसद कौशलेन्द्र सिंह व अन्य।

हमीरपुर-उ.प्र.। जिलाधिकारी संध्या तिवारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा व ब्र.कु. सपना।

नवरंगपुर-ओडिशा। उपजिलापाल गमालो पराग हर्षद को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नमिता।

फलेबास-नेपाल। सभासद विकास लम्सालजी को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. जानकी।